LOK SABHA

Monday, February 26, 1973/Phalguna 7, 1894 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[MR. SPEAKER *in the Chair.*]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Declining Trend in Sugar Production

*82. SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether the sugar production has a declining trend;

(b) if so, the reasons therefor; and

(c) the steps proposed to meet the deficiency?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (PROF. SHER SINGH): (a) to (c). The production of sugar, which had declined in the past two years due to shrinkage in the area under cane, diversion of cane to gur and khandsari, and damage caused to the cane crop by natural calamities such as excessive rains, floods in certain parts and drought in others, has started picking up as a result of the various measures taken by the Government to augment production.

श्री यमुना प्रसाद मंडल : क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करगे कि क्या यह सही है कि ईख की खेतीमें चूंकि कमी आई है इसलिये शार्टफाल हुआ है ? क्या ईख की खेती में इस लिये कमी आई है कि लोग खाद्यान्नों की तरफ ज्यादा झुक रहे हैं ? साथ ही क्या इसका दूसरा कारण यह है कि बहुत सी शुगर मिल बन्द पड़ी हैं ?

प्रो० शेर सिंह : इसके कारण तो मैंने दिये हैं । मैंने बतलाया कि गन्ने के क्षेत्र में शिकेंज की वजह से शुगर प्रोडक्शन कम हुआ । शिकेंज जो हुआ उसका एक कारण यह भी है कि लोग फूड ग्रेन ज्यादा पैदा करने लगे । मिल बन्द होने वाली बात ज्यादा नहीं हैं । कुछ मिलें ऐसी हैं जो ठीक से नहीं चल सकीं, यह ठीक बात है । कुछ एरिया में इसका असर भी पड़ा ।

श्री यमुना प्रसाद मंडल : मंत्री महोदय ने कहा है :

"Various measures are being taken by the Government."

क्या वह यह बतलायेंगे कि वह कौन से उपाय कर रहे हैं जिनसे यह बढ़ ? वैसे तो आप कहते हैं कि आप 36 लाख टन प्रोडक्शन करेंगे जब कि लास्ट टाइम 31–32 लाख टन हुआ था । मैं जानना चाहता हू कि वह कौन से मेजर्स हैं जिन से आप समझते हैं कि यह प्रोडक्शन बढ़ सकेगा ।

प्रो० शेर सिंह : माननीय सदस्य ने ठीक कहा कि पिछले वर्ष हमारे यहां कुल प्रोडक्शन 31–32 लाख टन हुआ था, लेकिन इस बार हमने कुछ इन्सेन्टिव दिये, कुछ एक्साइज रिबेट दिये और कुछ गन्ने की प्राइस ज्यादा बढ़ाई । प्राइस ज्यादा देने के लिये हमने पार्शल कंट्रोल का फैसला किया । इन सब की वजह से पिछले साल के मुकाबले अब की 15 फरवरी तक 3 लाख 40 हजार टन के करीब शुगर प्रोडक्शन ज्यादा हुआ । हमारा ऐसा अनुमान है कि इस साल 36 लाख टन के करीब पैदावार होगी ।

SHRI S. M. BANERJEE: I would like to know from the hon. Minister whether one of the causes of the diversion of sugarcane to khandsari and gur was because of the low price of sugarcane and, if so, may I know whether the price had been increased and, if so, how does it compare with the prices which were given last year and this year?

PROF. SHER SINGH: This year, the minimum statutory price of sugarcane has increased by about 20 per cent as compared to that of last year, and because of this policy of partial control, even a higher price is being paid in various parts of the country.

SHRI S. M. BANERJEE: After the partial control, what is the difference in the price between last year and this year?

PROF. SHER SINGH: I have stated that. The minimum statutory price is 20 per cent more as compared to last year.

श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव : क्या मंत्री महोदय को इस बात की जानकारी है कि इन चीनी मिलों में जो अफसर होते हैं उन में और गन्ना पहुंचाने वाले जो गाड़ीवान होते हैं उनमें कुछ इस तरह का गठबन्धन होता है जिससे कम गाड़ियां पहुंचने पर भी दिखलाया जाता है कि ज्यादा गाड़ियां पहुंचीं और वास्तव में पैसा ज्यादा दिया जाता है। इससे मिल को डाइरेक्ट घाटा होता है। वह जो घाटा हो रहा है उसे दूर करने की दिशा में मंत्री महोदय क्या कार्रवाई करने जा रहे हैं ?

प्रो० शेर सिंह : मैं समझ नहीं सका कि माननीय सदस्य का क्या मतलब है। मिलें घाटे में नहीं चल रही हैं। वह आम तौर से मुनाफे में हैं। अगर कहीं ऐसी कोई शिकायत हो तो माननीय सदस्य बतलायें हम राज्य सरकार को उसको भेजेंगे।

श्री हुकम चन्द कछवाय: मंत्री महोदय ने एक प्रश्न के उत्तर में बतलाया कि कुछ मिलें ठीक प्रकार से काम नहीं कर रही हैं। मैं जानना चाहता हूं कि जो मिलें ठीक से काम नहीं कर रही हैं वे पुरानी मिलें हैं या नई हैं और जो ठीक प्रकार से काम नहीं कर रही हैं उनके लिये क्या प्रयास किया जा रहा है ? मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि दो साल पहले मुरैना में एक सहकारी मिल खुली थी। वह अनेक दिनों से बन्द पड़ी है। पिछले हफ्ते लगभग 200 आदमियों को अलग कर दिया गया। इस की शिकायत भी आई है। इन कठिनाइयों को हल करने के लिये केन्द्रीय सरकार से सम्पर्क स्थापित किया गया। यहां से जो व्यक्ति वहां भेजे गये वह कुछ काम नहीं कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में सरकार क्या करने जा रही है ?

प्रो० शेर सिंह : मुझे इसके लिये नोटिस चाहिये।

श्री हुकम चन्द कछवाय : मंत्री महोदय ने कहा कि कुछ मिलें ठीक काम नहीं कर रही हैं। वह ठीक प्रकार से काम करें, इसके लिये सरकार क्या करने जा रही है ?

अध्यक्ष महोदय : यह बड़ा जनरल क्वेश्चन है।

प्रो० शेर सिंह : कुछ मिलें इसलिये काम नहीं कर रही हैं कि गन्ना पूरा नहीं है या कोई और भी डिफक्ट हो सकते हैं। अगर इसके बारे में जानकारी चाहिये कि कितनी मिलें किस अवस्था में हैं तो मुझ को अलग से नोटिस चाहिये।

श्री हुकम चन्द कछवाय : क्या मंत्री महोदय को इस बात की जानकारी है.....

अध्यक्ष महोदय : वह कहते हैं कि अगर किसी खास चीज के बारे में पूछना हो तो उसके लिये उनको नोटिस चाहिये ।

श्री अचल सिंह : मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि जो रिक्वायरमेंट हमारे देश के वास्ते हैं वह जो प्रोडक्शन हुआ है उससे पूरी हो जायेगी ?

प्रो० शेर सिंह : जी हां, इस साल जो प्रोडक्शन होगा वह जितनी हमारी रिक्वायरमेंट हैं उसको पूरा करने के लिये काफी हैं । बल्कि अक्तूबर में करीब 6 लाख टन हमारे पास बच रहेगा ।

SHRI M. RAM GOPAL REDDY: Our requirements are over forty lakhs and we have no backlog of the previous year. In Andhra Pradesh the co-operative factories wanted to pay more money to the sugarcane growers but the State Government has come in the way and stopped payment. How is the Government going to help the co-operatives to pay more to the cane growers and get more cane so that they could produce more.

PROF. SHER SINGH: I shall get in touch with the State Government and try to find out why the State Government is not allowing the factories to pay more to the cane growers.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: In view of the fact that the recovery figures of sugar out of cane have been continuously manipulated upto thrity per cent, the Government had posted excise inspectors to supervise the recovery figures' accuracy. Why is it that they have withdrawn those excise inspectors? The recovery figures are being greatly deflated now-a-days.

PROF. SHER SINGH: This question could be put to the Finance Ministry because I have no information about the excise inspectors.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I want your permission. Sugar production has declined. I am of the impression that the recovery figure, the ratio or percentage of sugar recovered from cane, was actually 10·5 and it is now shown as 8:2. There was a check before to prevent them doing this. Why had that check been withdrawn, giving them an opportunity for self-assessment. As a result the recovery figures have been grossly manipulated and that is why the figures show a decline in sugar production. Will the hon. Minister kindly tell us whether this is not a fact?

PROF. SHER SINGH: About recovery of sugar from cane, we can go into that question separately. The total production is assessed by the excise inspectors and they are attached to each mill; they have to realise excise duty.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I seek your guidance, Mr. Speaker. Will you not agree that production of sugar is related to recovery from sugarcane and the accuracy of those figures?

MR. SPEAKER: He has given his reply.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I am in your hands; the Minister is hinding certain facts; there is widespread malpractices.

MR. SPEAKER: Please sit down.

SHRI S. M. BANERJEE: The minister said that payment is made on the basis of recovery. What is being done is, if the actual recovery is 10 per cent, it is shown as 8 per cent and the extra sugar goes into black market. (*Interruptions*).

SHRI S. B. GIRI: Sugarcane is being diverted to khandsari because they are getting higher price. Therefore, will Government link the selling price of sugar and the sugarcane price, so that it will be an incentive to sugarcane growers to supply the cane to the sugar factories and not to khandsari manufacturers?

PROF. SHER SINGH: We will examine this suggestion.

श्री हुकम चन्द कछवाय: अध्यक्ष महोदय ये हर प्रश्न को टालने का प्रयास कर रहे हैं। इन लोगों ने बीस करोड़ रुपया मिल मालिकों से खाया है। हर सवाल को टालते जा रहे हैं..

अध्यक्ष महोदय : देहाती सभा इसको मत बनाओ।

PROF. SHER SINGH: The hon. member's allegation is absolutely wrong.

श्री हुकम चन्द कछवाय : बीस करोड़ नहीं तो क्या अस्सी करोड़ खाया है जो जान-बूझकर हर सवाल को आप टालना चाहते हैं ?

Import of Wheat from Canada

\+

*83. SHRI SHRIKISHAN MODI:
SHRI INDRAJIT GUPTA:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether the Union Government have decided to buy about 15 million bushels of wheat from Canada;

(b) if so, what will be the expenditure involved; and

(c) what will be the time by which the food supplies will reach India from Canada?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) A quantity of 17 m. bushels (4.68 lakh metric tons) has been purchased from Canada.

(b) The total expenditure likely to be incurred is Rs. 37:69 crores on cost and freight basis.

(c) The entire quantity is expected to arrive at Indian ports by June 1973.

श्री श्रीकिशन मोदी : कनाडा से गेहूं खरीदने की जरूरत इसलिये पड़ी कि भारत में अकाल की भयंकर स्थिति थी लेकिन यह गेहूं जून के अन्त तक आएगा। हमारी स्थानीय फसल अप्रैल तक आ जाएगी। यह गेहूं मार्च तक क्यों नहीं लाया गया, इसमें किस की गलती है कि आर्डर देर से दिया गया ? क्यों आप इसे पहले से एस्टीमेट नहीं कर सके कि स्थिति भयंकर होने वाली है ?

मैं यह भी जानना चाहता हूं कि पहली खेप कब तक आ रही है, दूसरी कब तक और आखिरी कब तक ?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: Perhaps what I said was not clear enough to the hon. Member. What I said was that the total quantity would be arriving by June end. It does not mean that arrival will start only in June. In fact, by 20th February about two lakhs tonnes of wheat and milo have arrived at Indian ports. Arrangements for 71 vessels have already been made to ship wheat from the countries from which they have been purchased and the last shipment would naturally be spread over up to June.

श्री श्रीकिशन मोदी : जो गेहूं कनाडा से खरीदा गया है वह दूसरे देशों के मुकाबले में मंहगा खरीदा गया है या सस्ता खरीदा गया है और कितना महंगा या सस्ता करीदा गया है ।

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: Wheat has been purchased from Canada, Argentina and USA. The price range for Canadian wheat was 90.57 dollars to 97:136 dollars per tonne FOB. For Argentina wheat the price has been 96.35 dollars FOB. For USA wheat the price range has been 99 to 106.25 dollars. Since these purchases have been made at different periods, the price range has been taken.

श्री श्रीकिशन मोदी : मंत्री जी ने प्राइसिस बता दी हैं। यह नहीं बताया है कि यह गेहूं सस्ता पड़ रहा है या महंगा पड़ रहा है।

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: These are commercial purchases. Naturally, the purchase price will depend upon the prevailing international market prices.

SHRI S. B. PATIL: Just now the hon. Minister said what the FOB